This question paper contains 2 printed pages]

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19 4/12/17

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **2603**

Unique Paper Code : **12051101** HC

Name of the Paper : **हिंदी भाषा और उसकी लिपि का इतिहास**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (CBCS)**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी के आरंभिक रूप को स्पष्ट करते हुए आधुनिक काल में उसके विकास को रेखांकित कीजिए। 14

अथवा

मुख्य आर्य भाषाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

2. हिंदी भाषा की प्रमुख बोलियों का परिचय दीजिए। 14

अथवा

हिंदी भाषा के विविध रूपों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

3. भाषा के विकास में लिपि के महत्व पर प्रकाश डालिए। 14

अथवा

ब्राह्मी से विकसित उत्तरी और दक्षिणी लिपियों का उल्लेख कीजिए।

4. देवनागरी लिपि के नामकरण की ऐतिहासिकता को बताते हुए, उसका स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 14

अथवा

देवनागरी लिपि के मानकीकरण के विविध पक्षों पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 6,6,7

(1) पूर्वी हिंदी की बोलियाँ

(2) सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी

(3) चित्र लिपि

(4) आधुनिक काल में हिंदी का विकास

(5) देवनागरी लिपि की सीमाएँ।

This question paper contains 4+1 printed pages]

(T4)

DEENBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19
19/12/17

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **2604**

Unique Paper Code : **12051102** **HC**

Name of the Paper : **Hindi Kavita (Adikalin Evam Bhaktikalin Kavya)**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi—CBCS**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. "अमीर खुसरो की कविता लोक संस्कृति का प्रतिबिम्ब है।" विचार कीजिए।

अथवा

विद्यापति की प्रेम-भावना पर प्रकाश डालिए। 12

2. कबीर की भाषा-शैली का विवेचन कीजिए।

अथवा

" 'मधुमालती' का मुख्य विषय 'प्रेम की पीर' है।" इस कथन का विश्लेषण कीजिए। 12

3. सूरदास के काव्य-सौंदर्य का विवेचन कीजिए।

अथवा

मीराबाई की गीति-योजना पर प्रकाश डालिए। 12

4. तुलसी की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए।

अथवा

तुलसी-काव्य के कला-सौंदर्य का परिचय दीजिए। 12

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) काहे को ब्याही बिदेस रे, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे बागों की कोयल
कुहकत घर-घर जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे खेतों की चिड़िया,
चुग्गा चुगत उड़ि जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।

अथवा

जहाँ-जहाँ पद जुग धरई। तहिं-तहिं सरोरुह झरई॥
जहाँ-जहाँ झलकत अंग। तहिं-तहिं बिजुरि-तरंग॥
कि हेरलि अपरुब गोरि। पइठलि हिअ मधि मोरि॥
जहँ-जहँ नयन बिकास। तहिं तहिं कमल-प्रकास॥
जहँ लहु हास संचार। तहिं-तहिं अमिअ-विधार॥
जहँ-जहँ कुटिल कटाख। ततहिं मदन-सर लाख॥
हेरइत से घनि घोर। अब तिन भुवन अगोर॥ 7

(ख) अति मलीन वृषभानु-कुमारी।
हरि स्रम-जल भीज्यों उर अंचल, तिहिं लालच न धुवावति सारी।
अध मुख रहति अनत नहिं चितवति, ज्यौं गथ हारे थकित जुवारी।
छूटे चिकुर बदन कुम्हिलाने, ज्यौं नलिनी हिमकर की मारी।
हरि संदेस सुनि सहज मृतक भइ, इक विरहिनी, दूजे अलि जारी।
सूरदास कैसें करि जीवैं, ब्रज बनिता बिन स्याम दुखारी।

अथवा

आली री म्हारे णेणाँ बाण पड़ी।
चित चढ़ी म्हारे माधुरी मूरत, हिवड़ा अणी गड़ी।
कब री ठाड़ी पंथ निहारौं, अपने भवण खड़ी।
अटक्याँ प्राण साँवरों प्यारो, जीवण मूर जड़ी।
मीरा गिरधर हाथ बिकाणी, लोग कह्याँ बिगड़ी। 8

6. निम्नलिखित पद्यांशों का दिए गए निर्देशों के अनुसार विश्लेषण कीजिए :

(क) काहे री नलिनी तूं कुम्हलानी
तेरे ही नालि सरोवर पानी।
जल में उतपति जल में बास
जल में नलिनी तोर निवास
ना तलि तपन तपति न ऊपरि आगि
तोर हेतु कहु कासनि लागि।

(भक्त का स्वरूप)

अथवा

दसन जोति बरनी नहिं जाई। चौंधे दिस्टि देखि चमकाई।
नेक बिगसाइ नींद महँ हँसी। जानहुँ सरग सेऊँ दामिनी खसी।
बिहरत अधर दसन चमकाने। त्रिभुवन मुनि गण चौंधि भुलाने।
मंगर सूक गुरु संहि चारी। चौक दसन भय राजकुमारी।
नहिं जानौ दहुं कहँ दुरि जाई। रहे जाइ ससि माहिं लुकाई।
जौ कोइ कहै कि बिध्धि पसारा, तेहि कर सुनहु सुभाउ।
बिधि गुपुत जग माहीं, काहुं न देखा काउ॥

(वर्णन-कौशल) 6

(ख) पग बाँध घूँघरयाँ णाच्यां री।
लोग कह्याँ मीरा भंइ बाबरी, सासु कह्याँ कुलनासाँ री।
विख रो प्यालो राणा भेज्याँ, पीवाँ मीराँ हाँसी री।
तण मण वारयाँ परि चरिणामाँ दरसण अमरित प्यासाँ री।
मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, थारो सरणाँ आस्याँ री।

(प्रेम-व्यंजना)

अथवा

अवधेस के द्वारे सकारें गई सुत गोद कै भूपति, लै निकसे॥
अवलोकि हौं सोच बिमोचन को ठगि-सी रही, जे न ठगे धिक-से॥
तुलसी मन-रंजन रंजित-अंजन नैन सुखंजन-जातक से॥
सजनी ससि में समसील उभै नवनील सरोरुह-से बिकसे॥

(भाषिक-सौंदर्य) 6

This question paper contains 4+1 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

S. No. of Question Paper : **2753**

Unique Paper Code : **12055105** HC

Name of the Paper : **हिन्दी कहानी**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : **I/III (CBCS)**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'छोटा जादूगर' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'उसने कहा था' के कथ्य का विवेचन कीजिए।

2. 'पाजेब' के छुन्नू की मनःस्थिति पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

'तीसरी कसम' के हिरामन की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

3. 'सिक्का बदल गया' **अथवा** 'दोपहर का भोजन' कहानी के शीर्षक की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए। 12

4. 'घुसपैठिए' **अथवा** 'वापसी' कहानी की मूल समस्या पर विचार कीजिए। 12

5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×9=27

(क) एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत को हवा में धधकाना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, फिर भी ठंड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा था। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है। सप्तर्षि अब भी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े। ऊपर आ जाएँगे, तब कहीं सवेरा होगा। अभी पहर से ऊपर रात है।

अथवा

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कल-निनाद गूँज रहा था। मैं खड़ा था, उस छोटे से फौव्वारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शराब पीनेवालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गम्भीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ।

(ख) आखिर पाँच बजते-बजते तैयारी मुकम्मल होने लगी। कुर्सियाँ, मेज, तिपाइयाँ, नैपकीन, फूल, सब बरामदे में पहुँच गए। ड्रिंक का इंतजाम बैठक में कर दिया गया। अब घर का फालतू सामान आलेमारियों के पीछे और पलंग के नीचे छिपाया जाने लगा। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गयी, माँ का क्या होगा ?

अथवा

एक तो पीठ में गुदगुदी लग रही है। दूसरे रह-रहकर चंपा का फूल खिल जाता है उसकी गाड़ी में। बैलों को डाँटों तो 'इस-बिस' करने लगती है उसकी सवारी! .... उसकी सवारी! औरत अकेली, तंबाकू बेचने वाली बूढ़ी नहीं। आवाज सुनने के बाद वह बार-बार मुड़कर टप्पर में एक नज़र डाल देता है, अँगोछे से पीठ झाड़ता है। .... भगवान जाने क्या लिखा है इस बार उसकी किस्मत में! गाड़ी जब पूरब की ओर मुड़ी, एक टुकड़ा चाँदनी उसकी गाड़ी में समा गई। सवारी की नाक पर एक जुगनू जगमगा उठा। हिरामन को सब कुछ रहस्यमय-अजगुत-अजगुत-लग रहा है।

(ग) हवेली आ गई। शाहनी ने शून्य मन से ड्योढ़ी में कदम रक्खा। शेरा कब लौट गया उसे कुछ पता नहीं। दुर्बल-सी देह और अकेली, बिना किसी सहारे के! न जाने कब तक वहीं पड़ी रही शाहनी। दुपहर आई और चली गई। हवेली खुली पड़ी है। आज शाहनी नहीं उठ पा रही। जैसे उसका अधिकार आज स्वयं ही उससे छूट रहा है! शाहजी

के घर की मालकिन.... लेकिन नहीं, आज मोह नहीं हट रहा है! मानो पत्थर हो गई हो। पड़े-पड़े साँझ हो गई, पर उठने की बात फिर भी नहीं सोच पा रही।

अथवा

"हे भद्र, हमारे पूर्वजों और मनुष्यों का बड़ा ही अंतरंग सम्बन्ध रहा है। उनके लिए हम अपने पुष्प, अपने बीच छिपी सारी संपदा, कंद-मूल, फल, पशु-पक्षी सब कुछ निछावर कर चुके हैं और आज भी करने के लिए प्रस्तुत हैं। विश्वास करें, शुरू से ही कुछ ऐसा नाता रहा है कि हमें भी उनके बिना खास अच्छा नहीं लगता। जवाब में उन्होंने भी हमें भरपूर प्यार दिया है। लेकिन आप ?.... हमें संदेह है कि आप मनुष्य हैं!"